मौज़दुरौ शरतांत

The Parable of the Workers

मौज़दुरौ शरतांत

The Parable of the Workers

Illustrations by:
Fred Adlao

Pahari-Bushahri
Shimla, Himachal Pradesh, India

Local

Copyright © 2023, NLCI

http://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/
You may not use this work for commercial purposes. You may adapt and add to this work. You must keep the copyright and credits for authors, illustrators, etc.

Big Book in Phahri Bushahri

प्रकाशन
NLL
email:scriptureinpaharibushahri@gmail.com

This book is an adaptation of the original, *The Parable of the Workers in the Vineyard*, Copyright © 2004, Kartidaya. Licensed under CC BY-NC 4.0.
English Scriptures quoted are from the Good News Bible © 1994 published by the Bible Societies/Harper Collins Publishers Ltd UK, Good News Bible © American Bible Society 1966, 1971, 1976, 1992. Used with permission.

दो बात

प्रभु की दया से हम बुशैहरी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे है। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है। जिसे बहुत ही सरल रीति से बताया गया है। इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है, जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें। हमारी यही प्रार्थना है की हमारी क्षेत्र के सभी लोग पढ़-लिख कर साक्षर बन सके ।

सौरगौ राज़ कौ गौरै माल्का मैसी आ, ज़ुण ज़िशै ऊज़ुईऔ नां सातै आपणे दाकै बगीच़ैदी मौज़दुरालै लां। तेऊऐ मौज़दुरालै एक दीनार रोज़ देंणांलै किऔ, सातै सै आपणें दाकै सौड़टैदी बेज़ै।

धुंइ दुसै निकड़ीऔ तेऊऐ, तैइऐ ओर बी बज़ारादी भेलै खौड़ै शाऐ, सातै तिनांलै बोलौ, तुमें बी अंगरै बगीच़ैदी कांमां कौरदै नाऔ, तैइया ज़ौ कुच़बी थारौ बोंणा तुमुलै देंऊ, धुंइ सैबी बागै।

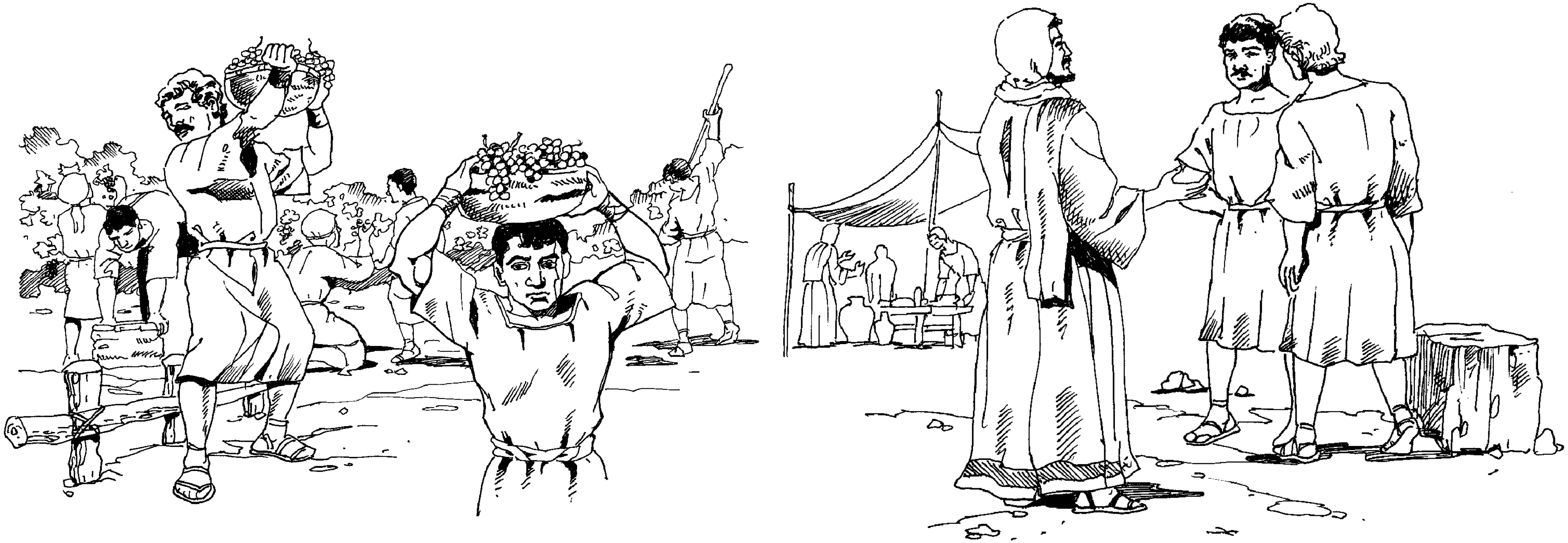

धुंइ तेऊऐ दुज़ै तैइया तिज़ै पहरा बिडै निकड़ीऔ तेणौ ई किऔ। तैइया दिन पुरै ओंणेका ऐक घांटै पैलै नाईऔ ओर भेलै खौड़ै शाऐ, तैइया तिनांलै बोलौ; तुमें दुस बौरी ईदै भेलै खौड़ै किलै तै? तिनें तेउलै बोलौ किलैकी हांमे कौसीऐ दयाड़ीदी ना लाऐ।

तेउऐ तिनांलै बी बोलौ, तुमें बी बगीच़दी कांमां कौरदै नाऔ। बैड़ी बगीच़ै मालकै आपणें बडारीलै बोलौ, मौज़दुरालै बेदीऔ ज़ुण पच़की बेरा आऐ तिनांका शुरु कौरीऔ भादैलै मौज़दुरी दै।

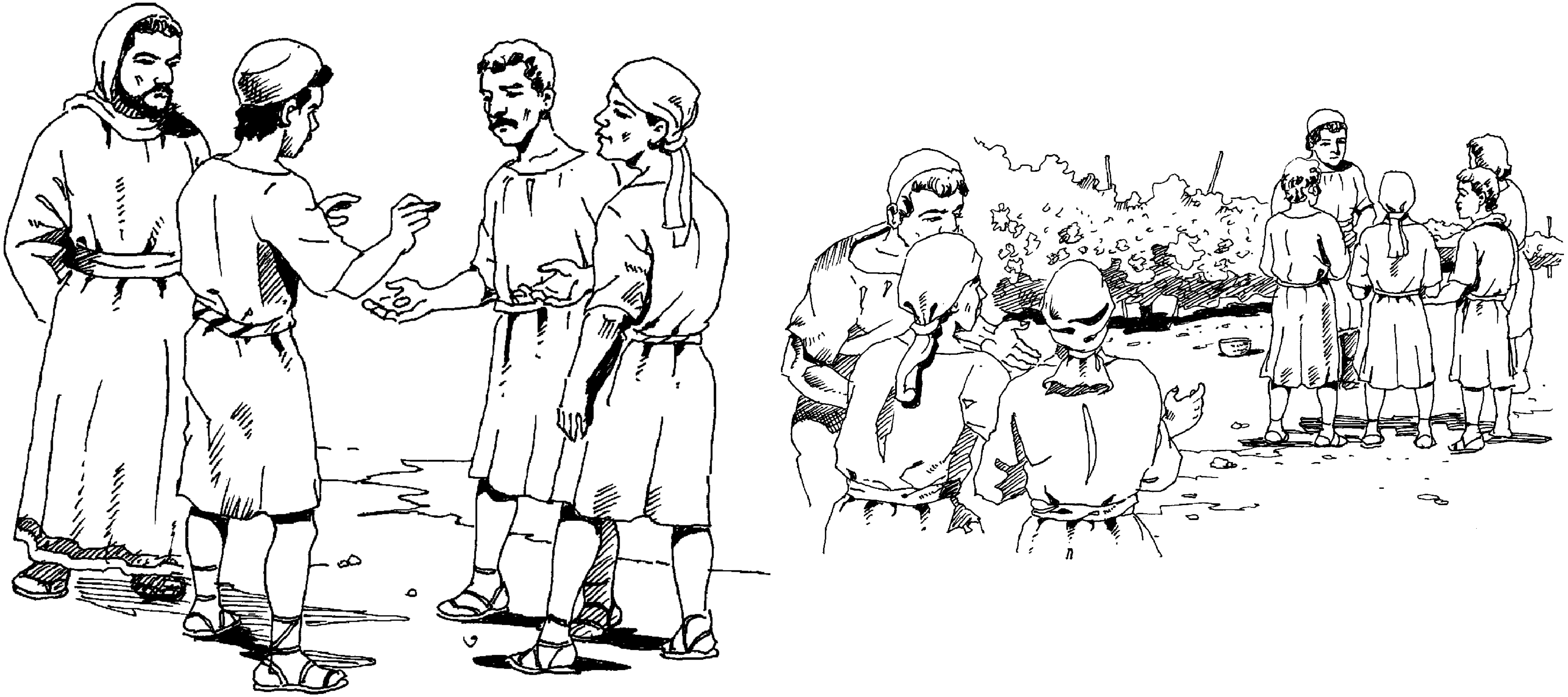

तै ज़ेई सै आऐ ज़ुण दिन खौत्म औंणेका एक घांटै पैलै तै लाऐदै तिनांलै एक एक दिनार मिलौ। ज़ुण पैलै तै आऐदै, तिनें जाणों हांमुलै ज़ादड़ौ मिलणौं, पर तिनांलै बी एक एक दिनारई मिलौ।

ज़ेई मिलौ, तै सै गौरै माल्कालै पराज़ुईओ बोलदै लागै। ईना पाच़की बेरै वाड़ै एक ई घांटै काम किऔ, तैबी तिनांलै हांमु बराबर मौज़दुरी देंनी, ज़ुंणीऐं दुसबौरी बगार चौकी सातै दौं सैई?

तेऊऐ तिनां मांज़ीआ ऐकीलै ज़वाब देनौं, ओ दोस्ता, मुं तुमूसी कुच्ह़ गौड़त नां किऔ; का तुमेंई चौपड़िऔ दिनी दयाडी ऐक दिनार नां बोलौ?

ज़ुण थारौ आ, तेउ नींओं, सातै बागौ मेरी मौरज़ी ऐणी आं, ज़ेती तुंमूलै देंणी तिनांलैबी ज़ुण पाचा आऐ तेती देंऊ। का जौ बांकौ नेंईआं आपणी जैदारी सी ज़ेणी मेरी मौरज़ी औई तेणों कौरु? का तुमें मैरै बौलै कौरणी बौज़ाका मुलै बुरी नौज़रीका शांओं?

ऐणकौई ज़ुण पाछ़ा आ, सै आगा-आगा औंणें,
तैइया ज़ुण आगा आ, सै पाछ़ा औंणें।

This book was created with Bloom Enterprise features freely enabled in order to support projects funded by the local community.